त्रिकालिक सन्ध्या, प्रातःकालिक स्नान, पितृ तर्पणादि वैदिक कर्म कनिष्ठ साधक के लिए ही अनिवार्य हैं। पूर्णतया कृष्णभावनाभावित मति से श्रीकृष्णभक्ति में तत्पर हुआ भक्त इन कर्मों के प्रति बिल्कुल उदासीन हो जाता है, क्योंकि वह पहल हा कृतार्थ हो चुका है। भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा से ज्ञान-लाभ कर लेने पर शास्त्रों में वर्णित तप-यज्ञादि आवश्यक नहीं रहते। दूसरी ओर, जो यह जाने बिना कि वेदों का लक्ष्य श्रीकृष्णप्राप्ति है, कर्मकाण्ड में तत्पर रहता है, वह केवल समय का अपव्यय करता है। कृष्णभावनाभावितभक्त तो वेद-उपनिषदों की परिधि, शब्दब्रह्म की सीमा का भी उल्लंघन कर जाते हैं।

18.2

श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि।।५३।।

श्रुति=नाना प्रकार के वैदिक मन्त्र; **विप्रतिपन्ना**=वेदों में कहे कर्मफलों से विचलित; **ते**=तेरी; **यदा**=जिस काल में; **स्थास्यसि**=स्थित हो जायगी; **निश्चला**=निष्ठ; **समाधौ**=कृष्णभावना में; **अचला**=स्थिर; **बुद्धिः**=प्रज्ञा; **तदा**=उस समय; **योगम्**=योग को; **अवाप्स्यसि**=प्राप्त होगा।

अनुवाद

जिस समय तेरी बुद्धि वेदों की अलंकारमयी भाषा से विचलित हुए बिना स्वरूप-समाधि में ही अचल रहेगी, उस समय तुझे दिव्य बुद्धियोग की प्राप्ति हो जायगी।।५३।।

तात्पर्य

समाधिवेत्ता वही कहलाता है जो पूर्णतया कृष्णभावनाभावित हो गया हो। भाव यह है कि पूर्ण समाधिवेत्ता को ब्रह्म, परमात्मा और श्रीभगवान् की भी प्राप्ति हो जाती है। अपने को श्रीकृष्ण का नित्य दास जान कर कृष्णभावनाभावित स्वधर्माचरण को ही अपना एकमात्र कर्तव्य मानना स्वरूप की परम सिद्धि है। कृष्णभावनाभावित अनन्य भगवद्भक्त वेदों की आलंकारिक भाषा से विचलित न हो और न ही स्वर्गप्राप्ति के लिए सकाम कर्म में प्रवृत्त हो। कृष्णभावनामृत में श्रीकृष्ण से सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाता है; अतः, उस दिव्य-अवस्था में श्रीकृष्ण के सम्पूर्ण आदेश का बोध हो सकता है। इन क्रियाओं के फलस्वरूप निश्चयात्मक ज्ञान की प्राप्ति निश्चित है। इसलिए केवल इतना ही अपेक्षित है कि श्रीकृष्ण अथवा उनके प्रामाणिक प्रतिनिधि—गुरुदेव की आज्ञा का पालन किया जाय।

19.2

अर्जुन उवाच।
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्।।५४।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **स्थितप्रज्ञस्य**=कृष्णभावना में अचल भाव से स्थित पुरुष के; **का**=क्या; **भाषा**=लक्षण हैं; **समाधिस्थस्य**=समाधि में स्थित;